Impact Factor : 1.021 Peer-Reviewed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – III, Issue – IV December 2014

हिंदी साहित्य के विकास में पत्रिकाओं की भूमिका

डॉ. सीमा तुकाराम जाधव,
सहायक प्राध्यापक,
आर.एन.सी आर्टस,जे.डी.बी कॉमर्स ॲड एन.एस.सी. सायन्स कॉलेज,
नासिक रोड – ४२२ १०१.

हिंदी साहित्य संचित ज्ञानराशी का कोश माना जाता है । जिसमें उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक तथा एकांकी आदि का समावेश किसी भी भाषा का पंद्राह प्रतिशत कविता, कहानी, उपन्यास आदि होता है, बाकी पचीस प्रतिशत में विभिन्न विषयों पर सामग्री होती हैं, लेकिन हिंदी में पचानबे प्रतिशत रचनात्मक साहित्य है और पाच प्रतिशत अन्य विज्ञान विषयक, तकनिकी विषयक, मनोविज्ञान, सिनेमा, भाषा आदि। इन विषयों पर संशोधन कार्य निरंतर चलता है। यद्यपि साहित्य ऐसा विषय है जिसपर सबसे ज्यादा परिक्षण, रिव्हू होता है। जो विविध पहलुओं को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। यह परिक्षण समीक्षा, आलोचना, समालोचना के रूप में हमारे पास पत्र– पत्रिकाओं के माध्याम से पहुँचता है।

ज्ञान मानव को अंर्तदृष्टि देता है, वह व्यक्ति समाज में परिवर्तन का वाहक बनता है। पत्र – पत्रिकाएँ ज्ञान का असीम भंडार होती हैं, इसलिए समाज में तथा व्यक्ति में व्यवस्था में होनेवाले परिवर्तन में इनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। अंत बड़ी–बड़ी सामाजिक क्रांतियाँ इन्हीं पत्र – पत्रिकाओं के माध्यम से ही घटित होती है। व्यक्ति के जीवन में भी पत्र – पत्रिकाएँ अमूलाग्र परिवर्तन लाती हैं क्योंकि इससे उपयोगी जानकारी प्राप्त कर व्यक्ति और अधिक सुयोग्य जीवन व्यतित करने लगा है।

साहित्य पत्र – पत्रिकाएँ सामाजिक व्यवस्था के लिए चतुर्थ स्तंभ का कार्य करती हैं और अपने पक्ष में योग्य वातावरण की निर्मिती करती है। इसी वातावरण को सुयोग्य बनाने की पृष्ठभूमि में पत्र – पत्रिकाओं ने सदैव अमोघ शस्त्र का कार्य किया है। इसके अंर्तगत साहित्य के विविध रूप ही नहीं बल्कि आंतरिक वाद – विवाद, साहित्यिक आलोचना, समालोचना, समीक्षा, प्रेरणा एवं पाठकों की प्रतिक्रिया भी देखने को मिलती है अर्थात् कह सकते साहित्य एवं साहित्यकार के रचना संसार का सूक्ष्म रूप में अध्ययन, अवलोकन किया जाता है। यद्यपि हिंदी के विविध आंदोलन एवं साहित्यिक प्रवृत्तियाँ तथा अन्य सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय करने में पत्र– पत्रिकाओं की अग्रणी भूमिका रहीं है। साथ ही हिंदी के आधुनिक साहित्य की एक और बड़ी विशेषता रही है कि वह अधिकांशतया पुस्तकों के रूप में पाठकों तक पहुँचाने से पहले पत्र – पत्रिकाओं के माध्यम से पाठकों तक पहुँच जाता है। अर्थात् पत्र– पत्रिकाएँ साहित्य एवं पाठकों के बीच

एक बहुत बड़े सेतू का काम करती हैं। जहॉ पुस्तके नहीं पहुँचती, वहीं पत्रिकाएँ आसानी से पहुँच जाती हैं। याने जो पाठक पुस्तक पढ़ने का समय नहीं जुटा पाते वे पत्रिकाएँ पढ़ लेते।

ब्रिटिश शासनकाल ही पत्र – पत्रिकाओं का उद्‌भव काल माना जाता है। हिंदी पत्रकारिता की शुरूआत बंगाल से हुई थी। उससे पूर्व कलकत्ता से निकलनेवाले 'बंगाल गॅजेट' के नाम से पूर्णरूपेन अखबार सबसे पहले 'वायसराय हिक्की' द्वारा १८१६ ई. में निकाला गया जो ब्रिटिश नीति से संबध्द पत्र था। वह भारतीय भाषा का पहला समाचार पत्र भी था । हिंदी में हिंदी पत्रकारिता का म श्रेय 'राजाराम मोहन राय' को दिया जाता है। जिन्होंने इस पत्र के माध्यम से भारतीयों के सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक हितों का समर्थन किया। समाज में व्याप्त अंधविश्वास और कुरीतियों पर प्रहार किया तथा जनता में जागरूकता लाने का प्रयास किया। इसके उपरांत राजाराम मोहन राय द्वारा 'मिरातुल', 'संवाद कौमुदी', 'बंगाल हैराल्ड' आदि पत्र निकाले और लोगों में जागरूकता फैलाई गई। ३० मई १८२६ को 'कलकत्ता' से पंडित जुगल किशोर शुक्ल के संपादन में 'उदंत मार्तण्ड' नामक सबसे पहला हिंदी समाचर पत्र निकाला गया था।

इन गतिविधियों के उपरांत कलकत्ता पत्र – पत्रिकाओं के दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण केंद्र बना जहॉ से उदंत मार्तण्ड, बंगदूत, प्रजामित्र मार्तण्ड तथा समाचार सुधा वर्षन आदि का प्रकाशन होता था। इनमे प्रारंभिक पॉचो साप्ताहिक पत्र थे और सुधावर्षन दैनिक पत्र था। इस 'सुधार' और 'बनारस' अखबार ये भी साप्ताहिक पत्र थे जो काशी से प्रकाशित होते थे। 'प्रजाहितैषी' एवं 'बुध्दि प्रकाश' का प्रकाशन आगरा से होता था। इन पत्र – पत्रिकाओं का मुख्य उददेश जनता में सुधार व जागरण की भावनाओं को उत्पन्न कर अन्याय एवं अत्याचार का विरोध करना था। इसके पश्चात सन १८६८ में भारतेंदु ने साहित्यिक पत्रिका 'कवि वचन सुधा' का प्रर्वतन किया और यहीं से हिंदी पत्रिकाओं के प्रकाशन में गती आयी।

भारतेंदु हिंदी साहित्य के एक महान हस्ताक्षर थे। आधुनिक हिंदी साहित्य में भारतेंदुजी का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारतेंदु बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास,निबंध आदि क्षेत्रों में उनकी देन अपूर्व है। उन्होंने हिंदी के सर्वांगीण विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और नवजागरण का संदेश लेकर अवतरित हुए। वे अपने समय के साहित्यिक नेता थे। मातृभाषा की सेवा में ही उन्होंने अपना जीवन – यापन किया। हिंदी भाषा की उन्नति उनका मुख्य उद्‌देश था और मूलमंत्र भी था।

''निज भाषा उन्नति लहै सब उन्नति को मूल
बिन निजभाषा ज्ञान को मिट न दिए को शूल।।''
''विविध कला शिक्षा अमित ज्ञान अनेक प्रकार।

सब देसन से लै करहू, भाषा माहि प्रचार।।''

अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण वे हिंदी साहित्य के एक दैदिप्यमान नक्षत्र बने। उनके हरिश्चंद्र चंद्रिका, कविवचन सुधा, हरिश्चंद्र मैग्जीन, स्त्री–बाल बोधिनी जैसे प्रकाशन उनके प्रगतिशील संपादकीय दृष्टिकोण का परिचय देते है। वे पत्रकारिता के ही नहीं आधुनिक हिंदी साहित्य के भी जन्मदाता माने जाते हैं। भारतेंदु ने अपने पत्रों और नाटकों द्वारा हिंदी गद्य को अनन्य साधारण उंचाई तक पहुँचाया। इनकी 'बालबोधिनी' महिलाओं पर केंद्रित पहली पत्रिका है । इससे प्रेरणा पाकर कई महिलाएँ हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में आयी। हिंदी पत्रकारिता को समृध्द करने का श्रेय भी भारतेंदुजी को जाता है। इतिहास, विज्ञान और समाजोपयोगी सामायिक विषयों पर उनकी पत्रिकाओं में उत्कृष्ट आलेख छपते थे। भारतेंदु युग के साहित्यकारों की केंद्रीय पत्रिका थी 'हरिश्चंद्र मैग्जीन, ब्राम्हण या हिंदोस्तान' जो कलकत्ता से प्रकाशित होती थी।

उस समय भारतीय संस्कृति, सामाजिक, राजनीतिक व राष्ट्रीय चेतना के जागरण एवं वाहक का कार्य कलकत्ता में संपन्न हुआ के यहाँ पर पत्र – पत्रिकाओं का प्रकाशन समृध्द रहा। इसके उपरांत महाराष्ट्र में भारतीय राष्ट्रीय कॉग्रेस में 'बाल गंगाधर तिलक' ने पत्र – पत्रिकाओं के माध्यम से महाराष्ट्र में जनजागृती का प्रयास अपने पत्रों के माध्यम से करना आरंभ किया। तिलक जी ने मराठी और हिंदी में 'केसरी पत्रिका' का संपादन एवं प्रकाशन किया।

यह सिलसिला उत्तरोत्तर छायावाद काल में बढ़ता गया। चांद, माधुरी, प्रभा, संदेश, समन्वय, मौजी, हंस, सरोज आदि मासिक पत्रिकाओं का प्रकाशन आरंभ हुआ।

सन १९०० से १९१८ ई. के दौर में द्विवेदी युग का आरंभ हुआ उसमें आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की 'सरस्वती' नामक मासिक पत्रिका उन दिनों सर्वाधिक प्रतिनिधी पत्रिका थी। द्विवेदी युग में मुख्यत राजनीतिक और साहित्यिक विचारधाराओं को लेकर प्रकाशित हो रही थी। कलकत्ता से 'कलकत्ता समाचार' तथा 'विश्वमित्र नामक' दैनिक पत्रिका प्रकाशित हो रही थी तो उत्तरप्रदेश से साप्ताहिक पत्र 'हितवाणी' और 'नृसिंह' का प्रकाशन होता था। तथापि इसके साथ छायावादी कवियों का नाम मतवाला इंदु, रूपाभ, श्रीशारदा जैसी पत्रिकाओं से भी जुड़े हुए थे।

छायावादी काल की पत्रिकाओं में मुख्य रूप से छायावाद संबंधी घटनाओं का वर्णन केवल 'माधुरी मासिक पत्र' में दिखाई पडता है तथा अन्य पत्रिकाओं में से लगभग छायावाद काल विलुप्त ही हो गया था।

उसी समय कृष्णकांत मालवीय के संपादन में 'मर्यादा' का प्रकाशन हो रहा था। उसी समय मुंशी प्रेमचंद जी की 'हंस पत्रिका' का बनारस से प्रकाशन होता था। जिसमें उच्चकोटि का साहित्य, कविताएँ,

निबंध, आलोचना को स्थान दिया जाता था। इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए छायावाद काल की परंपराओं को 'शिवपूजन सहाय' के संपादन में प्रकाशित हो रह पत्रिका जागरण के माध्यम से किया जा रहा था। इसी परंपरा को आगे बढ़ाने में अज्ञेय, बनारसीदास चर्तुवेदी तथा सेंगर, द्विवेदी जैसे साहित्यकारों ने निरंतर अपना योगदान दिया। आज इसी परंपरा को नित नई पत्रिकाएँ आगे बढ़ा रही हैं जिनमें सारिका, हंस, कथादेश, कथा सागर, वीणा, आलोचना, समसामायिकी, संचेतना, नया ज्ञानोदय जैसी कई सारी आलोचनात्मक तथा साहित्यिक पत्रिकाएँ आज भी अपना योगदान दे रही हैं।

निष्कर्ष रूप में कह सकते है हिंदी को साहित्यिक पत्रिकाएँ विभिन्न विधाओं के विकास में उल्लेखनिय भूमिका निभा रही हैं। इनका मुख्य उददेश्य ही यहीं है कि कथा, कहानी, उपन्यास, निबंध,नाटक, आलोचना, समालोचना, यात्रावत्तांत, जीवनी, आत्मकथा तथा शोध से संबंधित आलेखों का नियमित रूप से प्रकाशन करना है। अर्थात् भाषा साहित्य तथा संस्कृति के अध्ययन साहित्यिक पत्रिकाओं का उल्लेखनिय योगदान रहा है तथापि हिंदी साहित्य की वैचारिक और सामाजिक सरोकार को बनाए रखने में और उसकी रचना के संरक्षण और संर्वधन में पत्र – पत्रिकाओं की अहंम भूमिका रही है ।

संदर्भ :

१) भारतेंदु युग और हिंदी भाषा विकास की परंपरा – रामविलास शर्मा
२) हिंदी साहित्य और पत्र पत्रिकाएँ – डॉ. कांतिकुमार जैन
३) अभिव्यक्ति पत्रिका में साहित्यिक निबंध – देवेंद्र देवेश
४) समाचारपत्र विकिपिडिया
५) हिंदी भाषा क विकास मे पत्र – पत्रिकाओं की उपादेयता – प्रो. ऋषभदेव शर्मा